॥ ओ३म् ॥ हे आर्यजनहो ! गोरक्षण करो. या पेटका रक्षण करो. क्योंकि (गावः प्रतिष्ठा भूतानाम्)

श्लोकः—" पृष्ठे ब्रह्मा गले विष्णुर्मुखे रुद्रः प्रतिष्ठितः ॥ मध्ये देवगणाः सर्वे रोमकूपे महर्षयः ॥ १ ॥
नागाः पुच्छे सुराग्रेषु ये चाद्दी कुलपर्वताः ॥ मूत्रे गंगादयो नद्यो नेत्रयोः शशिभास्करौ॥२॥
एते यस्यास्तनौ देवाः सा धेनुर्वरदास्तु मे॥"वर्णितं धेनुमाहात्म्यं व्यासेन श्रीमता त्विदम्॥३॥

श्लोकः—वसंततिलक— हे सप्तलोक सुरगोसम किन्नरादि ॥
जीव्या समस्त उदरांत चराचरादि ॥
माता पिता सबजनांस परोपकारी ॥
धेनू पहा ! खल कसा कलि तीस मारी ॥ १ ॥

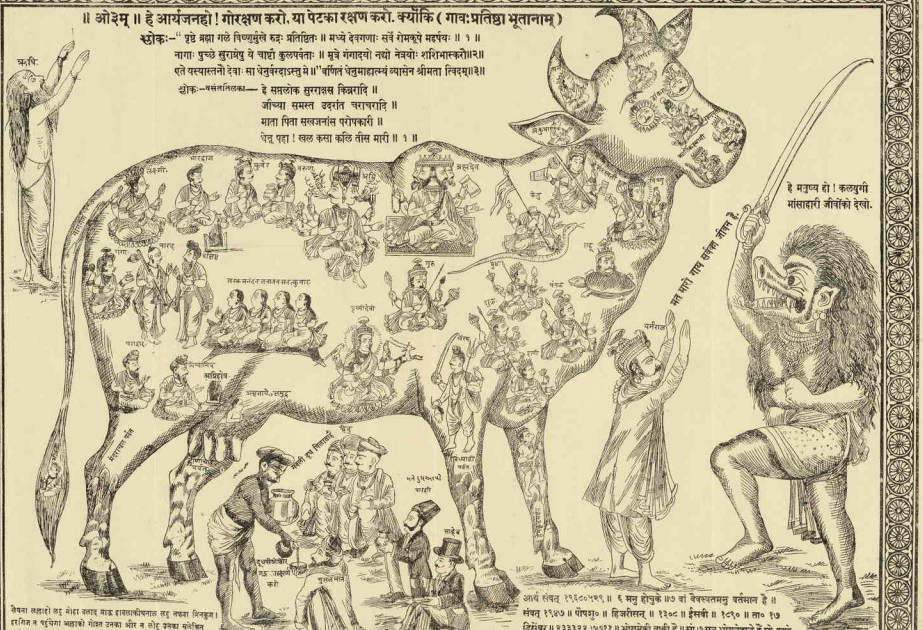

जैसा सहारो तद मोहा सबद माक हासलाकीपगाल तद लक्ष्मा विन्कुल।
हाजिल न सुधरा महाको मोहल उनका और न लोद उनका कर्मेकिन
पूंचेगी उनको सहंलगारी दुमदारी ऐसो हुरामने सुराजजी ३६ आपल.

आर्य संवत् १९६८०५९१ ॥ ६ मनु होपुके ॥७ वा वैवस्वतमनु वर्तमान है ॥
संवत् १९७७ ॥ पोषशु० ॥ द्विजरीसन् ॥ १३०८ ॥ ईसवी ॥ १९१० ॥ ता० १७
डिसेंबर ॥ २३३३२,७७३१ ॥ भोगमनकी बाकी है ॥ सो ७ मनु भोगनेवाले हैं सो परमेश्वरकी कृपा सहायतासे ये कालमें वर्तमान चला है । सो मनुष्योंको कर्तव्य करना चाहिये ।

नागपूर गोरक्षणी सभेचेउपदेशक–विद्यानंद सरस्वती स्वामी. प्रकाशक–सेमरान श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वरछापखाना, मुंबई. हमारे कार्यालयमें हिंदी और संस्कृत ग्रंथ विक्रयार्थ–न्यारहेपुलीपगाना